संपादकीय जागरण

मंगलवार, 19 दिसंबर, 2017 : पौष शुक्ल प्रतिपदा वि. 2074

विजेता बनने के लिए विजय की भूख होना आवश्यक है

# जनादेश का संदेश

**गुजरात और** हिमाचल प्रदेश के चुनाव नतीजे भाजपा की राजनीतिक बढ़त पर मुहर लगाने के साथ ही यह भी साबित कर रहे हैं कि विपक्ष को आने वाले समय में भी उसे चुनौती देना पहले की ही तरह मुश्किल होगा। स्वाभाविक तौर पर गुजरात के चुनाव नतीजों पर ही अधिक जोर है, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि जहां अपने गढ़ में भाजपा 22 साल के सत्ता विरोधी रुझान पर पार पाने में सफल रही वहीं कांग्रेस हिमाचल प्रदेश में पांच साल के सत्ता विरोधी रुझान का भी सामना नहीं कर सकी। निःसंदेह गुजरात में भाजपा को पिछली बार के मुकाबले कहीं कम सीटें मिलीं और वह सौ के आसपास ही सिमट गई, लेकिन एक तो लगातार छठी बार सत्ता हासिल करना कम उल्लेखनीय नहीं और दूसरे, इस तथ्य को भी ओझल नहीं किया जा सकता कि इस बार कांग्रेस को बतौर मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी की गुजरात में अनुपस्थिति का लाभ मिलने के साथ ही तीन नए नेताओं अल्पेश, जिग्नेश और हार्दिक का समर्थन हासिल हुआ। इन नेताओं के समर्थन से लाभान्वित हुई कांग्रेस के दिग्गज नेता और यहां तक कि राज्य में पार्टी का चेहरा माने जाने वाले नेताओं को जिस तरह हार का सामना करना पड़ा उससे इस नतीजे पर पहुंचना मुश्किल हो रहा है कि गुजरात के नतीजों ने कांग्रेस को कोई बड़ी ताकत दी है। हां, इसमें कोई दोराय नहीं कि कांग्रेस के बेहतर प्रदर्शन में सहायक बनने वाले तीनों नेता कहीं न कहीं भाजपा की कमजोरी को बयान करते हैं। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि भाजपा के मुख्यमंत्री न तो पाटीदारों के आरक्षण आंदोलन को संभाल सके और न ही दलितों के असंतोष को।

यह दिलचस्प है कि गुजरात में कांग्रेस के साथ ही भाजपा का भी वोट प्रतिशत बढ़ा। यह साफ है कि छोटे राजनीतिक दलों एवं निर्दलीय उम्मीदवारों के कमजोर प्रदर्शन का लाभ दोनों ने ही उठाया और इस मामले में भाजपा के मुकाबले कांग्रेस आगे दिखी। जो साफ नहीं है वह यह कि राहुल गांधी के मंदिर-मंदिर जाने से पार्टी को क्या हासिल हुआ? चूंकि मंदिर-मंदिर घूमने के क्रम में वह गुजरात के मुस्लिम समाज से दूरी बनाते और यहां तक कि इस समाज के मसलों का जिक्र करने से भी बचते दिखे इसलिए हैरत नहीं कि कांग्रेस को कुछ नुकसान उठाना पड़ा हो। नुकसान भाजपा को भी उठाना पड़ सकता था, यदि उसे जीएसटी पर व्यापारियों की नाराजगी दूर करने में सफलता नहीं मिलती। चूंकि शहरी इलाकों के मुकाबले ग्रामीण इलाकों और साथ ही आदिवासी क्षेत्रों में भाजपा का प्रदर्शन कमजोर रहा इसलिए उसे विकास की अपनी नीतियों पर नए सिरे से निगाह डालनी होगी। उसे इस सवाल का जवाब खोजना ही होगा कि दो दशक से भी अधिक समय के शासन के बावजूद आदिवासी एवं ग्रामीण इलाकों की अपेक्षाएं असंतोष के स्तर को क्यों छू रही हैं? कहना कठिन है कि चुनाव नतीजों का विश्लेषण करते समय कांग्रेस यह समझेगी या नहीं कि उसे ठोस वैकल्पिक विचार देने की जरूरत है, लेकिन यह समझे बगैर भाजपा का काम चलने वाला नहीं है कि गुजरात में ऐसा कुछ करना आवश्यक है जिससे वहां की जनता नरेंद्र मोदी की कमी महसूस न करे।

# 'सौभाग्य' से रोशन घर

**प्रदेश में** 'सौभाग्य' योजना उजाले की सौगात लेकर आई है। मार्च 2019 तक प्रदेश के 1.54 करोड़ घर रोशन होंगे। पहले ही दिन 119366 घरों के लिए बिजली कनेक्शन दिए गए। उन्नाव के बीघापुर में रविवार को सौभाग्य योजना के तहत प्रदेशव्यापी मेगा ग्राम शिविरों की मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जब शुरुआत की, तो उसमें संकल्प और दृढ़ता भी थी। संकल्प यह कि प्रदेश का हर घर रोशन होगा और दृढ़ता यह कि केंद्र सरकार की इस योजना को शत-प्रतिशत धरातल पर उतारा जाएगा। उन्होंने यह कहते हुए सपा और बसपा पर कड़े प्रहार किए कि दोनों ही दल शिक्षा और उजाले के विरोधी हैं। जब भाजपा की सरकार बनी थी तब प्रदेश के एक लाख 72 हजार 799 मजरों में बिजली नहीं थी, उनमें से एक लाख चार हजार 406 मजरों तक बिजली पहुंचाई जा चुकी है।

> वस्तुत : शासन और प्रशासन यदि चाह ले तो जनता के हित में सब कुछ संभव है, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यह बात साबित की है।

वस्तुतः शासन और प्रशासन यदि चाह ले तो जनता के हित में सब कुछ संभव है, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यह बात साबित की है। पहले जहां किसी मजरे में बिजली पहुंचाने को हर पोल के लिए 12 हजार और कनेक्शन के लिए 12-15 हजार तक लिए जाते थे, वह अब निश्शुल्क तक पहुंच चुका है। यहां तक कि तीन घरों के मजरे में भी गरीब की झोपड़ी रोशन हो रही है। मुख्यमंत्री न केवल लाइनलॉस को 10 फीसद से कम पर लाने के लिए प्रयासरत हैं, बल्कि उन्होंने प्रदेश में 1200 करोड़ की सात परियोजनाओं और 122 करोड़ से बने 29 सब स्टेशनों का लोकार्पण भी किया। निसंदेह यह बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना है, लेकिन इसका लाभ तभी है जब सभी को पर्याप्त रूप से बिजली उपलब्ध हो सके।

## कह के रहेंगे

माधव जोशी




## जागरण जनमत

कल का परिणाम

**क्या न्यायालयों में स्थानीय भाषा में बहस और फैसलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए?**




**आज का सवाल**

क्या विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत केंद्र सरकार के कामकाज पर मुहर है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर POLL लिखें, स्पेस देकर Y, N या C लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, N-नहीं, C-कह नहीं सकते

परिणाम एसएमएस से प्राप्त नतीजों के साथ जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

# भाजपा को सत्ता-कांग्रेस को संजीवनी



**डॉ. एके वर्मा**

**गुजरात नतीजे भाजपा को यही संदेश दे रहे हैं कि उसे किसानों और नौजवानों की खुशहाली के लिए काम करना पड़ेगा**

आखिरकार भाजपा ने फिर से गुजरात जीत लिया और हिमाचल में कहीं आसानी से कांग्रेस से सत्ता छीन ली, लेकिन यह साफ है कि गुजरात में भाजपा की इस जीत के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने गुजरात में पार्टी के लिए 150 सीटों का जो बड़ा लक्ष्य तय किया था वह हासिल नहीं हो पाया। उन्होंने यहां तक कहा था कि 150 से एक भी सीट कम आने पर भाजपा विजय उत्सव नहीं मनाएगी। शाह ने कांग्रेस के माधवसिंह सोलंकी द्वारा 1985 में जीती गई 149 सीटों का रिकॉर्ड तोड़ने का जो स्वप्न देखा था वह पूरा नहीं हो पाया। चूंकि कांग्रेस 2012 के मुकाबले अधिक सफल रही इसलिए पार्टी राहुल गांधी की ताजपोशी को कुछ महिमामंडित कर सकती है। लगता है कि पिछले 22 साल से लगातार सत्ता में रहने से गुजरात भाजपा प्रतिनिधियों में कुछ अहं आ गया था। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि गुजरात के ग्रामीण मतदाताओं को भाजपा का विकास रास नहीं आया और इसीलिए ग्रामीण मतदाताओं और साथ ही पटेलों ने सौराष्ट्र, कच्छ में उसे वोट नहीं दिया, लेकिन नतीजे बताते हैं कि गुजराती मतदाता मोदी से जुड़ाव महसूस करता है।

हार्दिक-जिग्नेश-अल्पेश की तिकड़ी के कारण युवा मतदाताओं का कांग्रेस के प्रति रुझान दिखा। अनेक नए मतदाता जिन्होंने गुजरात में कांग्रेस की सरकार अभी तक देखी ही नहीं है उन्हें शायद कांग्रेस से कोई विशेष समस्या नहीं थी और वे कांग्रेस को गुजरात की अनेक समस्याओं-बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण और ग्रामीण विकास आदि को दूर करने के लिए एक अवसर देने के विरुद्ध नहीं थे। दलित समाज वैसे तो गुजरात में अधिकतर कांग्रेस के साथ ही रहा है पर पिछले वर्ष ऊना में दलितों के विरुद्ध हिंसा से गुजरात के दलित भाजपा के विरुद्ध एकजुट हुए। परिणामस्वरूप भाजपा को तत्कालीन मुख्यमंत्री आनंदीबेन पटेल को हटाना पड़ा, लेकिन यह बड़ी बात है कि सीटें कम पाने के बाद भी भाजपा का मत प्रतिशत 2012 के मुकाबले बढ़ा ही है। गुजरात चुनाव में भाजपा के समक्ष दो प्रमुख चुनौतियां थीं। एक तो आरक्षण के कारण पटेल वोटों के खिसकने का डर था और दूसरा, जीएसटी पर व्यापारियों की नाराजगी का मसला था। इसके अलावा कांग्रेस ने राहुल के माध्यम से जोरदार और आक्रामक चुनाव प्रचार किया। राहुल ने मंदिरों की शरण लेकर 'नरम-हिंदुत्व' के जरिये भाजपा को उसी की भाषा में चुनौती देने की कोशिश की। फिर भी भाजपा गुजरात में अपनी सत्ता सुरक्षित रखने में सफल रही तो इसीलिए कि राज्य की जनता मोदी को चाहती है। मोदी का अपना एक व्यक्तित्व है और उसे वह न केवल गुजरात वरन वैश्विक पटल पर भी स्थापित करने में सफल हुए हैं। लगता है कि लोग मोदी के बाद आए मुख्यमंत्रियों आनंदीबेन पटेल और रुपाणी को मोदी जितना स्वीकार नहीं कर पाए। मोदी ने चुनाव-प्रचार की कमान जिस तरह संभाली उससे सिद्ध कर दिया कि वह अभी भी गुजरात की जनता के लिए उतने ही सुलभ हैं। यदि मोदी प्रचार की कमान अपने हाथ न लेते तो भाजपा के लिए बुरे परिणाम हो सकते थे। इसे मोदी की राष्ट्रीय नीतियों खासतौर से जीएसटी और नोटबंदी आदि पर उनके सुधार के प्रयासों की जन-स्वीकृति के रूप में देखा जा सकता है।



अवधेश राजपूत

पाटीदार समाज पढ़ा-लिखा, संपन्न, सामाजिक रूप से सशक्त और उच्च-जाति का है। पाटीदारों ने एक समय दलित आरक्षण और फिर ओबीसी आरक्षण का विरोध किया था। उनके द्वारा आरक्षण की मांग करना कुछ अजीब सा है। अल्पेश ठाकोर (ओबीसी) का आंदोलन हार्दिक पटेल के विरुद्ध खड़ा हुआ। कांग्रेस ने इसीलिए हार्दिक की जगह अल्पेश को कांग्रेस में सम्मिलित किया। संभवतः कांग्रेस ओबीसी समाज को भाजपा से काटना चाहती थी। शायद पाटीदार समाज भी जनता था कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के चलते कांग्रेस उसे 50 फीसद के ऊपर आरक्षण नहीं दे सकती। संविधान के अनु 46 और अनु 31-सी का प्रयोग कर आरक्षण के लिए कानून बनाकर उसे नौवीं अनुसूची में डालने का रास्ता भी सर्वोच्च न्यायालय ने केशवानंद भारती मुकदमे का उल्लेख करके बंद कर दिया है। उसने साफ किया है कि ऐसे किसी कानून का वह न्यायिक-पुनर्निरीक्षण करेगी। इसके अलावा किसी राज्य सरकार द्वारा बनाए ऐसे किसी कानून को राष्ट्रपति की भी स्वीकृति की आवश्यकता पड़ती है।

जीएसटी पर व्यापारियों की नाराजगी और उससे प्रभावित होकर कांग्रेस को वोट देने की संभावना में भी अंतरविरोध था। व्यापारी जानता था कि जीएसटी टैक्स का सरलीकरण है और अंततः वह तो ग्राहक के ही हिस्से में जाएगा, लेकिन जीएसटी कानून के स्पष्ट न होने से वह परेशान था। जो व्यापारी कच्चे बिल पर काम करते हैं वे भी जीएसटी से चिंतित थे। व्यापारी जानता था कि कांग्रेस के सत्ता में आने से भी कोई रोल-बैक तो होगा नहीं, उलटे केंद्र की सरकार उनका कच्चा-चिट्ठा खोल सकती है। इसीलिए इसकी संभावना कम ही थी कि गुजरात के व्यापारी जीएसटी पर भावावेश में आकर कोई निर्णय लेते। वैसे भी मोदी भरोसा दिला रहे थे कि वह उनकी बाकी समस्याओं का निदान करेंगे। राहुल ने नरम हिंदुत्व पर देर से अमल किया और वह न हिंदुओं को आकृष्ट कर सके और न ही मुस्लिम जनाधार बढ़ा सके। कुछ मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में भाजपा की जीत इसे इंगित भी करती है। राज्य में मुसलमानों का एक बड़ा वर्ग भाजपा को वोट देता रहा है। कांग्रेस का दंगा-युक्त काल उसे अच्छी तरह याद है और वह कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था। फिर कांग्रेस का कोई चेहरा भी तो गुजरात में नहीं था। आखिर मतदाता किस पर अपना दांव लगाता? इस पर हैरत नहीं कि उसके बड़े नेता हार गए।

शाह के चुनाव प्रबंधन और कोली, प्रजापति, चौधरी जैसी जातियों से गठजोड़ ने भी भाजपा का काम आसान किया। हार्दिक और जिग्नेश की रैलियों में युवाओं की भीड़ आई जरूर, लेकिन वोटों में तब्दील नहीं हुई। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि 2014 लोकसभा चुनावों के बाद से भाजपा के जनाधार का समावेशी राजनीति के चलते लोकतंत्रीकरण हुआ है। ओबीसी का एक बड़ा वर्ग उस मध्यम वर्ग में शामिल हो गया है जो भाजपा का प्रमुख समर्थक रहा है। यदि भाजपा अपने समावेशी जनाधार के साथ-साथ नेतृत्व का भी लोकतंत्रीकरण करती है तो संभवतः आगे आने वाले समय में वह कांग्रेस मुक्त भारत के अपने नारे को और धार दे सकेगी, लेकिन गुजरात चुनाव परिणामों की अनिश्चितता ने लोकतांत्रिक संघर्ष को बहुत महत्वपूर्ण बनाया है। यह हमारे लोकतंत्र की विजय है। इसी के साथ ईवीएम पर अविश्वास का मामला भी खत्म हो गया और चुनाव आयोग की प्रमाणिकता और निष्पक्षता सिद्ध हो गई। भाजपा के लिए गुजरात चुनाव नतीजों का संदेश यही है कि उसे गुजरात में बेहतर विकास के साथ किसानों की बेहतरी और नौजवानों की खुशहाली के लिए काम करना पड़ेगा। इसी के साथ उसे जनता के बीच और समय व्यतीत करना पड़ेगा। अगले वर्ष आठ राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। उनके लिए कमर कसने की वजह भाजपा को गुजरात चुनाव नतीजों ने दे दी है। कांग्रेस को संजीवनी सी तो मिली है, लेकिन यह कहना कठिन है कि वह उसका सही इस्तेमाल कर सकेगी।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोसायटी एंड पॉलिटिक्स के निदेशक हैं)

response@jagran.com

# नए भारत के लिए जनादेश



भूपेंद्र यादव

**चुनाव में गुजरात के लोगों ने कांग्रेस के जातिवाद के स्थान पर सुशासन और विकास वाली राजनीति को ही प्राथमिकता दी**



परंपरागत भारतीय राजनीति में चुनाव जाति, वंश, संप्रदाय जैसे पहलुओं पर केंद्रित रहे हैं। तमाम चुनाव विश्लेषक भी इन्हीं आधार पर चुनावी भविष्यवाणी करते रहे हैं, परंतु भाजपा गुजरात चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में वंशवाद और जातिवाद के खिलाफ विकासवाद के नारे के साथ चुनावी रण में उतरी। कांग्रेस ने न केवल भाजपा की विकासवादी राजनीति का विरोध किया, बल्कि भ्रामक प्रचार के माध्यम से यह धारणा स्थापित करने का प्रयास भी किया कि गुजरात के विकास में सत्यता नहीं है। जहां कांग्रेस अपने इस प्रयास में सफल नहीं हो पाई वहीं भाजपा लगातार विकास के मुद्दे के साथ चुनाव में आगे बढ़ती रही। चुनाव के दौरान ही विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के माध्यम से भी गुजरात के विकास दर के दस प्रतिशत होने की बात सामने आई।

अगर गुजरात में विगत 22 वर्षों के भाजपा शासन को देखें तो कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि क्षेत्रों में गुजरात ने बहुत ही उत्कृष्ट ढंग से विकास किया है। सरकार की नीतियों के परिणामस्वरूप रोजगार के अवसर भी पैदा हुए। केंद्र सरकार ने नोटबंदी और जीएसटी के रूप में दो महत्वपूर्ण निर्णय लिए। कांग्रेस को लगा था कि वह नोटबंदी और जीएसटी जैसे मुद्दों के सहारे गुजरात में जीत हासिल कर लेगी, मगर जनता ने उसकी मंशा भांपते हुए उसके इरादों पर पूरी तरह पानी फेर दिया। अगर इस चुनाव का समग्र विश्लेषण करें तो इस चुनाव में विकास के मुद्दे और सरकार के प्रति जनता का विश्वास स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि गुजरात में विकास की जो प्रक्रिया चली है उसका लाभ गुजरात के सभी लोगों को मिला है। यहां तक कि कांग्रेस के समय जब रंगनाथ मिश्रा आयोग की रिपोर्ट आई थी तो उसमें भी बताया गया था कि गुजरात में अल्पसंख्यकों का विकास अन्य राज्यों की तुलना में बेहतर ढंग से हुआ है। वैसे विकास का तात्पर्य सिर्फ सरकार की नीतियों से नहीं है। इसके अंतर्गत कई और विषय भी आते हैं। कानून व्यवस्था की स्थिति, महिलाओं का सम्मान, अधिकतम कल्याणकारी नीतियों को जनता तक पारदर्शी ढंग से पहुंचाने की व्यवस्था, भ्रष्टाचार का खात्मा, निर्णायक नेतृत्व, ये सब भी विकास के मानक होते हैं जिनमें गुजरात की स्थिति बहुत बेहतर है।

विकास के अलावा गुजरात चुनाव का दूसरा केंद्र बिंदु सुशासन रहा। इस चुनाव समेत पहले भी कांग्रेस जब भी चुनाव लड़ी है उसने वोट बैंक की राजनीति को ही प्रमुख माना है। वह दलित से लेकर अल्पसंख्यक तक सभी को वोट बैंक के रूप में देखने की राजनीति करती आई है। कांग्रेस शासन के दौरान 'खाम' की राजनीति गुजरात ने देखी है। 'खाम' की राजनीति का अर्थ है वर्ग-विशेष के लोगों को लामबंद कर वोट बैंक बनाकर चुनाव जीतना। इस बार भी कांग्रेस ने पाटीदार समाज में असंतोष फैलाकर हार्दिक पटेल के माध्यम से आंदोलन चलाने की कोशिश की। उसने अपनी ही पार्टी के एक हारे हुए जिला पंचायत सदस्य को 'ठाकोर सेना' नामक संगठन के रूप में खड़ा किया। जिग्नेश मेवाणी को 'दलित सेना' के नाम से खड़ा किया। यह साफ होता है कि राहुल गांधी ने जातिवादी ताकतों को आउटसोर्स किया। कांग्रेस सिर्फ भाजपा के प्रति एक भ्रम की स्थिति गुजरात के विभिन्न समाजों में फैलाना चाहती थी। इसके पीछे उसका मूल उद्देश्य यह था कि गुजरात आपस में बंट जाए और इसका राजनीतिक लाभ उसे मिले, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। कांग्रेस के जातिवाद के स्थान पर गुजरात के लोगों ने प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सुशासन और विकास वाली राजनीति को ही वरीयता दी।

यह चुनाव 'लोकतंत्र' और 'वंशवाद' के बीच में भी था। इस चुनाव के दौरान ही 'वंशवादी राजनीति' की परंपरा को जारी रखते हुए राहुल गांधी कांग्रेस अध्यक्ष बने। वहीं लोकतांत्रिक तरीके से चलने वाली भाजपा ने अपनी संगठनात्मक शक्ति को बढ़ाया। चुनाव शुरू होने से पहले ही भाजपा ने आदिवासी क्षेत्रों तक पहुंच बढ़ाई। पार्टी ने दीनदयाल जन्म शताब्दी वर्ष की योजना के अंतर्गत विस्तारकों की योजना का निर्माण किया जिसके द्वारा सभी बूथों तक विस्तारक गए। पार्टी ने मजबूत सांगठनिक ढांचे के माध्यम से शक्ति-केंद्र की स्थापना की जिसके माध्यम से प्रत्येक राजनीतिक गतिविधि की निगरानी के साथ-साथ आम मतदाता से संपर्क रखने का कार्य हुआ। अपने विषयों और विचारों सहित 22 वर्षों का हिसाब राज्य की जनता तक पहुंचाने के लिए पार्टी ने घर-घर लोक संपर्क अभियान भी चलाया। एक तरफ जब कांग्रेस बैलगाड़ी की बात कर रही थी तो भाजपा सी-प्लेन को प्रदेश की जनता के समक्ष विकास के एक मॉडल के रूप में लेकर आई। अहमदाबाद के रिवर फ्रंट से दूर-देहात में स्थित ढेरों बांधों को जोड़ने का जो काम हुआ है वह यह दर्शाता है कि अगर तकनीक अहमदाबाद के शहरी क्षेत्रों के लिए है तो ग्रामीण क्षेत्र के बांधों के लिए भी है। यह चुनाव 'न्यू इंडिया' बनाम 'मध्यकालीन युग' के बारे में भी था। यहां न्यू इंडिया का अर्थ है कि हम वे सभी निर्णय लें जो देशहित में हों। हम उन नीतियों को लागू करें और उन तकनीक का विकास करें जिससे देश आगे बढ़ सके। 'मध्यकालीन युग' का अर्थ है कि लोगों को जाति और कबीलों में बांटकर देखा जाए। यही कारण है कि राहुल गांधी से लेकर हार्दिक और जिग्नेश की सभा कभी भी किसी विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों के बीच नहीं हुई। कुछ लोगों का हुजूम इकट्ठा करके उन लोगों ने यह माहौल बनाने की कोशिश की कि गुजरात में एक आंदोलन उठ खड़ा हुआ है जबकि वास्तविकता इसके उलट थी। कांग्रेस के विपरीत विभिन्न वर्गों और समूहों से बात करने के लिए भाजपा अध्यक्ष अमित शाह का युवा टाउन हॉल कार्यक्रम हुआ जिसमें लाखों युवाओं ने भाग लिया, महिलाओं से संवाद के लिए सुषमा स्वराज का कार्यक्रम हुआ, दलित, ओबीसी, आदिवासी समाजों से सीधा संपर्क किया गया, प्रधानमंत्री ने भी कार्यकर्ताओं और विभिन्न वर्गों के साथ संवाद किया। ऐसे में समझा जा सकता है कि वैचारिक रूप से यह चुनाव 'न्यू इंडिया' बनाम 'मध्यकालीन युग' के बीच का था।

देश के लोकतंत्र में सुधारों का जो क्रम है, वह लंबे समय तक चलने वाला है। हमारे देश में सुशासन की राजनीति को लंबे समय तक जारी रखने की आवश्यकता है। गुजरात ने हाल के वर्षों में कृषि से लेकर विभिन्न क्षेत्रों में जो प्रगति की है उस दृष्टि से आवश्यक तकनीक, शासन में जनता की भागीदारी और समृद्धि सभी लोगों के पास हो। भारत जिन जीवन-मूल्यों को लेकर आगे बढ़ता रहा है, उनमें परिवार, संस्कृति, सौहार्द, विकास और तकनीक के नवीन प्रयोग द्वारा एक नए भारत के निर्माण का संकल्प है।

(लेखक भाजपा के राज्यसभा सदस्य हैं)

response@jagran.com

## ऊर्जा

### सरलता

जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुओं के अतिरिक्त अधिक का अपने लिए उपयोग न करने की दृष्टि सरलता की प्रेरणा-आधार है। अपव्यय, श्रृंगार से बचना और मितव्ययता सादगी है। प्रदर्शन में समय और धन नष्ट होता है और इससे आपके व्यक्तित्व में चार चांद नहीं लगते। धरती के देवता वे हैं, जो अपने अनुकरणीय आचरण से दूसरों में सादगी की प्रेरणा भरते हैं। महाकवि माघ हृदय की उदारता के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी दयनीय आर्थिक स्थिति में एक रात उनके घर आकर एक याचक ने बताया कि मेरी कन्या का विवाह है। मेरे पास कुछ भी नहीं है। आपकी ख्याति सुनकर आया हूं। कुछ सहायता मिल जाने पर काम हो जाएगा। कवि-हृदय भर आया। घर में देने को कुछ न था। पास सो रही पत्नी के शरीर पर दृष्टि गई। धीरे-धीरे एक कंगन उतारा और अतिथि को देते हुए बोले कि इस समय अधिक के लिए विवश हूं, जो कुछ है स्वीकार कीजिए। पत्नी की आंख खुली। वस्तुस्थिति समझकर मंद मुस्कराहट के साथ वह बोलीं कि विवाह जैसा कार्य एक कंगन में कैसे हो सकेगा। दूसरा कंगन उतारकर देने पर माघ पुलकित हो उठे। स्वाध्याय सरलता बढ़ाता है। एक अमेरिकी विद्वान का कथन है कि मैं बिना खाए और नहाए रह सकता हूं, पर पुस्तकें पढ़े बगैर चैन नहीं पा सकता। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम की मां ने उनमें सादगी और अच्छे संस्कारों की नींव डाली। जन्म देने वाली ऐसी माताओं की गोद और नाम धन्य करने वाली संतानें संघर्ष में तपकर इतिहास रचती हैं।

जटिलता पार करते ही सरलता आती है। व्यक्ति के आचरण की जांच उसके कलह के समय व्यवहार से होती है। जीवन में वेदना है, पर संवेदना नहीं। बुद्धि है, सद्बुद्धि नहीं। चित्र है, पर चरित्र नहीं। संसार है, पर संस्कार नहीं। मनुष्य आकृति है, पर प्रकृति नहीं। व्यक्ति है, पर व्यक्तित्व नहीं। जो अपनी गलती सुधार कर प्रायश्चित करता है, वह साधु है। जो गलती मानकर खेद जताता है, वह सज्जन है। जो हठ करता है, वह अच्छा इंसान नहीं है और जो सही-गलत में गलत को सही कहता है और सही को गलत कहता है, वह भी नेक इंसान नहीं है। एक व्यक्ति ने कहा कि मैंने क्रोध को जीत लिया है। असल में उसने क्रोध को नहीं जीता, बल्कि अपनी एक कमी पर विजय प्राप्त की।

डॉ. हरिप्रसाद दुबे

## पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

### धर्म परिवर्तन का खेल

हिंदू समाज को तोड़ने की साजिश शीर्षक से लिखे अपने लेख में जीतेंद्रानंद सरस्वती ने देश में हिंदुओं के धर्म परिवर्तन पर चिंता जताई है। सचमुच हिंदुओं का धर्म परिवर्तन करना बहुत ही गंभीर विषय है, वह भी दुनिया के सबसे बड़े धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में। हालांकि हिंदुओं का धर्म परिवर्तन ही एक चिंता का कारण नहीं है, बल्कि उनका पाखंडी बाबाओं के चक्कर में पड़ना भी खतरनाक है। लोगों के धर्म परिवर्तन और पाखंडी बाबाओं के जाल में फंसने के अलग-अलग कारण हो सकते हैं, लेकिन गरीबी भी इसका एक कारण है। इसमें कोई दो राय नहीं कि धर्म परिवर्तन देश की एकता और अखंडता के लिए खतरा है। यह भारत की एकता में अनेकता की छवि को धूमिल करने वाला है। हालांकि स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन करने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन किसी लालच में आकर या जबरन धर्म परिवर्तन सरासर गलत है।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

### नोटा हो प्रभावी

गुजरात और हिमाचल प्रदेश के चुनावों में करीब साढ़े 5 लाख मतदाताओं ने नोटा का बटन दबाया। नोटा महज मतदाता द्वारा रोष जाहिर करने का जरिया है। नोटा का उद्देश्य किसी को हराना या जिताना नहीं है, बल्कि राजनीतिक दलों पर दबाव डालना है। नोटा का प्रभाव चुनावो के नतीजों पर नहीं पड़ता है। दरअसल नोटा के जरिये कुछ व्यक्तियों को वर्तमान व्यवस्था के प्रति रोष जाहिर करने का अवसर तो मिल जाता है, लेकिन चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के अलावा कुछ ठोस लाभ नही मिल रहा है। अब नोटा को सक्रिय रूप से लागू और प्रभावी करने की आवश्यकता है। इसको लेकर सभी पार्टियों के उम्मीदवारों को आत्म-चिंतन करने की गहन आवश्यकता है।

mkumar.sidhmukh@gmail.com

### राहुल से उम्मीदें

आखिरकार गुजरात और हिमाचल प्रदेश के परिणाम आ गए। शुरुआती रुझानों में कांग्रेस को बढ़त मिलती तो जरूर दिखी थी, लेकिन अंतिम दौर में कांग्रेस पिछड़ गई। गुजरात में बीजेपी जीत जरूर गई, लेकिन कम सीटें ही हासिल कर पाई। इन परिणामों के साथ ही कांग्रेस की झोली में और दो राज्यों की हार शामिल हो गई। स्वस्थ लोकतंत्र में एक मजबूत विपक्ष का होना जरूरी है जो कि फिलहाल दिखाई नहीं दे रहा। कुछ हद तक कांग्रेस की इस हार में उसके अपने नेताओं का भी योगदान शामिल है। ये हार राहुल और कांग्रेस पार्टी को निराश तो जरूर करेगी, लेकिन नए अध्यक्ष को इस हार को भूलकर आगे बढ़ना होगा। राहुल का मुकाबला मोदी और अमितशाह जैसे कुशल रणनीतिकारों से है जो हर चुनावी रणनीति के माहिर खिलाड़ी माने जाते हैं। राहुल अभी राजनीति में युवा हैं ऐसे में देश उनकी तरफ उम्मीदों के साथ देख रहा है। राहुल को सोच विचार कर फैसले लेने होंगे।

rohitjournalist68@gmail.com

### एच-1बी वीजा

हाल ही में अमेरिका में बसे भारतीयों के लिए ट्रंप सरकार ने सख्त कदम उठाते हुए एच-1बी वीजा धारकों के संबंध में ओबामा के उस फैसले को निरस्त करने का निर्णय लिया है जिसके अनुसार वीजाधारक पति या पत्नी को अमेरिका में नौकरी करने की अनुमति है। 2015 में ग्रीन कार्ड धारकों को ओबामा सरकार ने अमेरिका में कार्य करने की स्वतंत्रता प्रदान की थी। ट्रंप प्रशासन ओबामा की इस पहल से नाराजगी दर्शाते हुए इस नियम को खत्म करने की वकालत कर रहा है। ट्रंप प्रशासन के इस कड़े रुख को अपनाने के बाद लाखों भारतीयों की नौकरी एवं कामकाज अधर में लटक जाएंगे।

अंकित कुंवर, आर्यभट्ट कॉलेज, नई दिल्ली

### एक बार फिर पराजय

गुजरात के महासमर का आखिर समापन हो गया। जनता ने अपना फैसला सुना दिया। सत्ता विरोधी लहर की संभावनाओं के बीच भाजपा मोदी के बलबूते अपनी साख बचाने में सफल रही। वहीं कांग्रेस की सीटों में इजाफा तो हुआ पर उसे एक बार फिर गुजरात में पराजय झेलनी पड़ी। शायद यह पहला ऐसा चुनाव था जहां दोनों पक्षों ने अपनी खूबियों का बखान करने की बजाए विरोधी की कमियां ढूंढ़ने में अपनी उर्जा लगा दी । वह जमाना गया जब वोटर सफेद कमीज ढूंढता था अब तो वोटर भी यह देखता है कि किस कमीज पर कम दाग लगे हैं। गुजरात में कांग्रेस व भाजपा के पास कोई मैच जिताऊ राजनीति का स्थानीय खिलाड़ी नहीं था, इसलिए कांग्रेस के न चाहते हुए भी मुकाबला मोदी बनाम राहुल हो गया। गुजरात का चुनाव दोनों पक्षों के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था, मोदी ने अपने अंदाज में जनमानस को लुभाने के लिए ताबड़तोड़ जनसभाएं की तो राहुल की रैलियों में भी खूब भीड़ नजर आई। राहुल गांधी ने पहली बार तन्मयता व लगन के साथ नेतृत्व किया, मोदी का अनुसरण करते हुए भगवान की शरण में पहुंच कर मंदिरों की परिक्रमा भी की पर सोमनाथ मंदिर दर्शन का विवाद अनावश्यक सवाल खड़े कर गया। हालांकि शुरू में मुकाबला बराबरी का लग रहा था और राहुल गांधी टक्कर देते नजर आ रहे थे किंतु बाद में कांग्रेस के बड़बोले नेताओं ने राहुल का बना बनाया खेल बिगाड़ कर रख दिया। कांग्रेस भी जानती थी कि मोदी राजनीति के माहिर खिलाड़ी हैं और वे हाथ आए अवसर को भुनाना बखूबी जानते हैं, फिर भी कांग्रेस अपने बड़बोले नेताओं पर अंकुश नहीं लगा सकी । अपनी इस चूक का खामियाजा कांग्रेस को भुगतना ही पड़ा। देखने वाली बात यह होगी कि अब कांग्रेस अपने उन बड़बोले नेताओं के साथ कैसा बर्ताव करेगी जिनकी बदजुबानी के कारण दौड़ में बराबर चल रही पार्टी पिछड़ गई।

रणजीत वर्मा, फरीदाबाद

## ट्वीट-ट्वीट

हिमाचल में कांग्रेस सिर्फ एक कार्यकाल के सत्ताविरोधी रुझान को मात नहीं दे पाई तो गुजरात में भाजपा ने 22 सालों के ऐसे रुझान को धता बता दिया। गुजरात की जीत में अंतर भले ही कम हुआ हो, लेकिन जीत आखिर जीत ही होती है और यह किसी भी मायने में कम नहीं है।

नूपुर@UnSubtleDesi



विधानसभा चुनाव के नतीजों से पता नहीं किन लोगों को कांग्रेस की वापसी होती नजर आ रही है। दोनों राज्यों में हारना कोई वापसी नहीं है।

सदानंद धूमे@dhume

भाजपा के लिए यह भले ही उतनी बड़ी जीत न रही हो, लेकिन यह भी नहीं भूलना चाहिए कि वह राज्य में 22 साल और केंद्र के तीन साल के सत्ता विरोधी रुझान का सामना कर रही थी। पाटीदार आंदोलन, नोटबंदी, जीएसटी और किसानों के संकट ने भी उसकी चुनौतियां बढ़ा दी थीं।

रूही तिवारी@RuhiTewari

गुजरात के नतीजों का एक पहलू यह भी है कि शहरी इलाकों की 55 सीटों में भाजपा ने 43 और कांग्रेस ने 12 सीटें जीतीं तो ग्रामीण गुजरात की 127 सीटों में 71 पर कांग्रेस और 56 पर भाजपा ने जीत का परचम लहराया।

राजदीप सरदेसाई@sardesairajdeep

## जनपथ

शीश मुड़ाते ही पड़ी ओलों की बौछार,
दो-दो सूबों में मिली एक साथ फिर हार।
एक साथ फिर हार चली ना कोई माया,
मंदिर दर्शन और जनेऊ काम न आया।
बन करके अध्यक्ष रहोगे रोते - गाते,
तो पत्थर ही रोज पड़ेंगे शीश मुड़ाते।

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 28 अंक 154